तनगनस्वरूपसदा।दोन्हातझूलाकरहै।।निर्विकारबालकवतठाडो।।नाज्ञादृष्टि
लगाकरहै।।कांचन०।२।।पीछिकमंडलश्रास्त्रपरिग्रह।।तिलतुषजरनल्याकरहै
बाहिजमलिनदिसैनरजजल।विषयकषायघटाकरहै।।कांचन०।३।।पंचमहाव्रत
पंचसमितिसो।।तिनगुपतिरिछ्याकरहै।।रत्नत्रयदशविधिधरमधरै।।बारभावना
ध्याकरहै।।कांचन०।४।।बाविसपरिषहसहैनिरंतर।।द्वादशविधतपस्याकरहै।।
रासहसभेदसिलपालै।श्रातमध्यानसदाकरहै।।कांचन०।५।।ग्रिषमरितुरवित
सरसुकै।दवसमअचलदह्याकरहै।।ताकेश्रृंगशिलापरजोगी।।पदज्युगधरथिर
करहै।।कांचन०।६।।वरषाकालभयानकरयणी।मुसलधारवरषाकरहै।।ऐसे
समैंतरूनीचे।।छिनछिनविंदुसह्याकरहै।कांचन।७।सीतपडैजलजमिजायज
वनतरूभसमहुवाकरहै।।तालनदीदरियावनकेतट।।काष्टसमानरह्याकरहै।कांच
न०।८।।श्रावकघरनिचंतचनदेषै।।जायनडंडरह्याकरहै।।दोषछियालीसटारीमु
र।अमराहारगह्याकरहै।।कांचन०।।९।।अठावीसमुलगुणउत्तरगुण।लषचवरल्या
निभ्याकरहै।।कहतहिराचंदवेकबमिलसी।पूरणमोमनसाकरहै।कांचन०।१०।।इति

॥१॥ खुमावच॥ कबहमसेभावहिसोलभावनातिर्थंकरपदकारीरे॥ कबहम०॥ टेक॥
दर्शनविशुद्धिपथमशुभघ्याउं॥ दोषपचीसनिवारीरे॥ देवधरमगुरुशास्त्रतपनको
विनयकरूंअतिभारीरे॥ कब०॥१॥ सीलअनेकाभेदसहितसदा॥ पालुसकलमल
टारीरे॥ ज्ञानपदुजेरनकुपदाऊं॥ कालअकालसंभारीरे॥ कब०॥२॥ चिंतउदिढवैराग्य
सदाउर॥ भवभोगतनुअसारीरे॥ पात्रचतुर्विधिदेखीअनुपम॥ दानकरूंनितभारी
रे॥ कब०॥३॥ द्वादशविधतपसेउनिरंतर॥ यथाशक्तिअनुसारीरे॥ साधुसंबंधीउपस
र्गआयोदुरकरूंततकारीरे॥ कब०॥४॥ दशविधवैय्यावृत्तपकरूंनितरोगअसाध्यनिहा
रीरे॥ भक्तिकरूंअरहंतदेवकी॥ उरसकलपरिहारीरे॥ कब०॥५॥ आचारजबहुश्रुतशा
स्त्रनकी॥ भगतिकरूंप्यारीप्यारीरे॥ छहआवश्यकक्रियात्रिकालही॥ करूंप्रमादविद
रीरे॥ कब०॥६॥ जिनशासनकरूमार्गप्रभावन॥ पुजामहोछवभारीरे॥ साधर्मिवात्सल्य
करूमहास्नेहअकृतिमधारीरे॥ कब०॥७॥ येहविधिप्रभुकबउदयआयगी॥ वांछापुर
सिहमारीरे॥ कहतहिराचंदजातैंहोहै॥ छियालिसगुणधारीरे॥ कब०॥८॥ इति॥ खुमा
वच॥ नरभवपाकरधरमनकीना॥ सोभवनिफलगुमायारे॥ नरभव०॥ टेक॥ ज्यौंसर

कमलविनानदिजलविन॥जिवविनाज्यौंकायारे॥वासविनाफुलपयविनधेनुसी
विनाज्यौंजायारे॥नरभ०॥१॥फलविनवृछ्पंखविनपंखी॥भ्रातकिसाविनमायारे
णविनपुत्रलूनविनभोजन।कंठविनाज्यौंगायारे॥नर०॥२॥मतीविनमंत्रिदेवविन
मंदिर॥वृछकिसाविनछायारे॥चंदविनानिशिमुनिकिरियाविन।मातकिसीवि
रे॥नर०॥३॥धनविनभोगजोगविनजोगी।करविनज्यौंअसिपायारे॥दुगविन
नसत्यविनवात्तो॥घृतविनअन्नजूषायारे।नरभ०॥४॥दंतविनांगजअछरविनश्रु
त।महिविनज्यौंघनछायारे॥गुरुविनज्ञानसभाविनपंडित॥दयाविनवृषनसुहाया
रे॥नरभव०॥५॥यौंजानिजिनधर्मकरोनित।सफलकरोनिजकायारे॥अमुलिकसु
हिराचंदकहतहै॥पुण्यउदयअवआयारे।नरभ०॥६॥इति॥ दे॥ष्युमावचा॥देखोभा
इनकरणीसैं॥वहुतजीवदुखपायारे॥देषो॥टेक॥प्रथमव्यसनजूवांरचिपांडवराज
पाटहरवायारे॥वनचरसमहोकेनिशिवासर।वनवनमैंभटकायारे॥देषो०॥१॥राजा
वकमासभक्षनसेती॥दूर्गतिकेदुषपायारे।सुरापानकरिछपनकोटिसव॥जादवराज
रायारे॥देषो॥२॥सेठचारुदतगणिकासैंरत॥निजघरद्रव्यहरायारे॥अपकीरतिभइ

निवेरपानैं॥तारदरता निडुकाया रे॥देषो॥३॥ बलदत्त चक्री पार घिसौं नरक मे जाय
वसाया रे॥शिवभुती ब्राह्मण चोरी करा फिर फिर दंड भराया रे॥देषो०॥४॥तीन षंड को
राजा रावण परमणी सुलुभाया रे॥सिता कौ हर अपजस पायो॥फुनि निज प्राण गुमा
यारे॥देषो०॥५॥इक विसन सेती इतना दुख सब का कहां कहा पारे॥अश्रुभ छांडि शुभ
मारग लागो॥हिरालाल नैं गाया रे॥देषो॥६॥ इति॥७॥ अथ भावना॥ समज देख जिय इन
जग मांही॥कोइ न साथी आवै रे समज०॥टेक॥सदन जिहां का तिहां रहैगा॥धन घर
मे रह जावे रे॥त्रिया रहेगी घर द्वार न मै॥पशु गोठा मे रहावे रे॥समज०॥१॥मात तात स
सज्जन जन मिलकरा भूमि मसान लगआवै रे॥देह रहैगा तव चित्ता मैं॥अंत अकेला जा
वै रे॥समज०॥२॥आय अकेलो जाय अकेलो॥पाप अकेलो कमावै रे॥नरक गति मैं जा
य अकेलो॥दुःख अकेलो पावै रे॥समज०॥३॥पुन्य उपाकर जात अकेलो॥सुरगन के सु
ष पावे रे॥नाश करम को करत अकेलो॥मुकति अकेलो जावे रे॥समज॥४॥तातैं तज
अधर्म धर्म करो॥हिरालाल एह गावै रे॥परलोकन मैं जिव के साथी पाप पुन्य दोय जावै
रे॥समज०॥५॥ इति॥८॥ अथ भावना॥ या विध जो गिज्योग सुरमते तीन के मो वलिहारी

है। याविध: ०। टेक। पंचमहाव्रतकंथा ज्याकै॥ मुनिजनतनसुविसारी है। मुलउत्तर गुण
पाणीसेती॥ सुरतिकरि करिपखारी है॥ याविध०॥१॥ द्वादस्त्रा अनुप्रेत्यासीरजटा॥ उपसम
दंडज्यु भारी है। पंचसमितिजंगोटा कसिकै॥ शीलकसोटाधारी है॥ याविध०॥२॥ संज्य
मकीझोलीशुभखंधे। फेरिपंचघरसारी है। दोकरखप्पर आगैंमाडै॥ एषणासमिति अहा
री है॥ याविध०॥३॥ इंद्रिदमनकीकरीसारंगी। रत्नत्रय जिसतारी है॥ दुविधाधर्मकोनाद
सुनावत। चेतनअलखजगारी है। याविध०॥४॥ करुणाकीमाला उरशोभै। परिषह अं
गक्षारी है॥ रागदोषदुकुकानचिराकै। समकितमुद्राडारी है॥ याविध०॥५॥ तनगु
फामेंबसतनिरंतर। ग्यानदिपकउजयारी है॥ तीनगुपतिमढीमांहीवसै॥ सुमता
गिनलारी है॥ याविध०॥६॥ अष्टकरमइंधनकीधूनी॥ ध्यानअगनसौंजारी है॥ दश
लक्षणगुणचक्रफिरावत॥ आगमदृष्टिनिहारी है॥ याविध०॥७॥ तपगिरिवरचढिजग
रदेखैसिद्धनिरंजनन्यारी है॥ जहांदेखैतहांअवरनदेखै। परमपरापतिसारी है॥ या
०॥८॥ सुकलध्यानपरिपूरणकरकै केवलसिंगिगुजारी है॥ सुरनरफणिसीसआइ तन
छिन॥ गोरखनगतिउचारी है॥ याविध०॥९॥ ऐसाजोगसुगुरुजेसाधै। तिनकीगतकछु

रीहै॥ अमुलिकसुतहिराचन्दकहतहै॥ आवागमननिवारीहै॥ याविध०१०॥ इति॥ ऐ
बुमाव॥ इनविधयज्ञनिरंतरकरणं॥ निजपरकाहित्तकारीरे॥ इन०॥ टेक॥ चिदानंदय
जमानयज्ञका॥ करणहारअतिभारीरे॥ संतोषहिजज्ञकिसामग्री॥ होमकुंडतनधारीने
इन०॥१॥ सवपरिग्रह होमयोग्यवस्तु॥ के ज्ञादर नहिंनपारीरे॥ लोचकिजेअरसवजीवद
या॥ सोइदत्तणप्यारीरे॥ इन०॥२॥ वहुरीज्याकेकरणेंकाफल॥ सिद्धसुपदवलिहारीरे॥ ऐसा
शुकलध्यानहैसोई॥ प्राणायामचितारीरे॥ इन०॥३॥ सत्यमहाव्रतथंभयज्ञमैं॥ जिसपशु
वंधैपारीरै॥ इहचंचलमनसोइपशुअर॥ तपरुपअग्नीजारीरै॥ इन०॥४॥ पंचइंद्रिइंधन
कहियेपहयहै॥ धर्मयज्ञभवतारीरे॥ कहतहिराचन्दयज्ञपशुके॥ नरकनकेअधिकारीरे
इन०॥५॥ इति॥ १०॥ बुमावच॥ त्रिभुवननित्यचैत्यचैत्यालय॥ धोकत्रिकालहमारीहै॥ त्रिभु
वन०॥ टेक॥ सातकोडिवहतरीलखसंख्या॥ ७७२००००॥ भुवनालयअधिकारीहै॥ मध्यलो
कच्यारिसैअठावन॥ ४५८॥ यामअकृतिमधारीहै॥ त्रिभुवन॥ १॥ व्यंतरसुरअरज्योति
कसुरके॥ गेहअसंख्यअपारीहै॥ लखचौरासीसहससत्यानौंतेइस॥ ८४९७२३॥ नरधमङ्गा
रीहै॥ त्रिभुवन०॥२॥ आठकोडछपनलाखअरु॥ सत्तानवेहजारीहैच्यारसैएक्यासी॥ ८५६

९७४८१॥सवमिलै॥जिनमंदिरसुषकारीहै॥त्रिभु०॥३॥इकइक घरमैंइकसैवसुवसु॥
प्रतिमान्यारीन्यारीहै॥पंचवरणमणिमैंपद्मासन॥धनुषपांचसैसारीहै॥त्रिभु०॥४
ठ॥अडवतेतिसकिरोडफुनि॥छहतरिलाख॥८३३७६०००००॥१तारीहै॥गुणचासमह
च्यारसैचौसठ॥४९४९६॥मध्यआगारीहै॥त्रिभु० ५॥कोडिइक्यानौलाखबहतरी॥अ
ठहतरिहजारीहै॥च्यारिसैचोरासि॥९१९६७८४८४॥नरधमैं॥व्यंतरज्योतिकन्यारीहै
त्रिभु०॥६॥नौअरबपचिसकोडि त्रिपणलख॥सत्ताईसहजारीहै॥नोसैअठतालि
९२५५३२७९४८॥सवमुरती॥व्यंतरजोतिकन्यारीहै॥त्रिभु०॥७॥अकृत्तिमअकृ
मजनके॥मंदिरप्रतिमासारीहै॥कहतहिराचंदनितप्रतिवंदैं॥भवजलतारणहारी
है॥त्रिभुवन०॥८॥इति॥११॥पदरागदीपचंदी॥कवेनिरग्रंथस्वरूपधरूंगा॥तपकरके
भलातपधरके॥मुकतकूंवरूंगा॥कबे०॥टेक॥अजिहांकबग्रहवासआससबछोडी॥कब
बबनमैंविचरूंगा॥बाह्यअभ्यंतरत्यागिपरिग्रह॥उभयलिंगसुधरूंगा॥कबे०॥१॥
अजिहांहोयएकाकिमैंपरमनउदासी॥पंचाचारचरूंगा॥कबथिरज्योगकरीपदमा
सन॥इंद्रिदमनकरूंगा॥कबे०॥२॥अजिहांआतमध्यानसजीदलअपनो॥मोहअरी

लहूंगा॥ त्यागिउपाधिसमाधिलगाकर॥ परीषहसहनकरूंगा॥ कबे०॥३॥ अजिहांक
बगुणरूपानअंगिपरचढके॥ कर्मकलंकहरूंगा॥ आनंदकंदचिदानंदसाहिब
बिनसुमरेसुमरूंगा॥ कबे०॥४॥ अजिहांऐसीलबधिजबपाऊंतबमैं॥ आपेआप
तरूंगा॥ अमुलिकसुतहिराचंदकहतहै॥ बहुरिनांजगमैंपरूंगा॥ कबे०॥५॥ इति॥१२
पदरागदीपचंदी॥ तुतोएहनरभवनिफलगुमायो॥ फुलवनमैंभलाफुलरणमैं॥ माल
तिनैंज्यौंजायो॥ तुतो०॥ टेक॥ अजिहांश्रीजिनभक्तिपुजानहिंकीनी॥ जिनगुणमुष
थेनगायो॥ जैनसिद्धांतसुण्यौंनहिकबहू॥ विधिवततपनाधरायोतुतो०॥१॥ अजिहांउ
तमपात्रकूंदाननदीनौं॥ भावनामनमैंभायो॥ शिलरतननहिंपाल्योजतनकर॥ परति
यमांहिलुभायो॥ तुतो०॥२॥ अजिहांउतमतीरथसाधुकीसेवा॥ धरममेधननालगायो
तत्वअतत्वविचारनकीन्हो॥ समकितरतनहरायो॥ तुतो०॥३॥ अजिहांपरिग्रहआरं
भबहुविधकरके॥ अहनिशिपापकमायो॥ अमुलिकसुतहिराचंदकहतहै॥ नरक
उपायउपायोतुतो०॥४॥ इति॥१३॥ पदरागदीपचंदी॥ पदरागदीपचंदी॥ करोजिनधर्म
सदाहितठानी॥ निजमनमैंभला॥ निजदिलमैं॥ समजकरप्राणी॥ करो०॥ टेक॥ अजिहां

धरमजिहाजसमानमहाहै॥तारकभवदधिपाणी॥धरमकरमपरवतचुरणनकौ
वज्रगदासमजानी॥करो०॥१॥अजिहांसुरगमुकतसुषधामचढनकौं॥धर्मसोपान
कहानी॥दुरगतिनरकदुवाररोकनकौं॥आगलधर्मवषानी॥करो॥२॥अजिहांधर
मसोइदशलछनसमकीत॥ज्यामैंदयाकीषाणी॥अमुलिकसुतहिराचंदकहतहैपा
पमिथ्यातकुग्यानी॥करो०॥३॥इति॥१४॥पदरागदीपचंदी॥ तजोजियआश्रवपापकि
नी॥एहनरकभलाएहनरकनिगोदकेदानी॥तजो॥टेक॥अजिहांपंचमिथ्या
हाअतिदुरधर॥अविरतद्वादशजानी॥तरकषायपच्चीसकहापो॥इनसुहोतव
हानी॥तजो०॥१॥अजिहांपद्रहजोगकहेदुषदायक॥क्यौंनतजोअभिमानी॥चा
तपकरि॥रसतावन॥रोकिएआवतपाणी॥तजो०॥२॥अजिहांजिनइनसेयेते
दुषपाये॥भयेहोनरककेथानी॥जिनइनत्यागकियोतेपलकमैंमुक्तिलहीसुष
णी॥तजो०॥३॥अजिहांअमुलिकसुतहिराचंदकहतहै॥झटपटकुमताकुग्यानी॥
वसिखमानसमजिकछुचेतन॥सुमताकरोपटराणी॥तजो०॥४॥इति॥१५॥पदराग
दीपचंदी॥धरोदिढधर्मसुआतमज्ञानी॥शिवसदनभलाशिवमहलचढनकी॥नि

नी॥ धरो०॥ टेक॥ अजिहां त्यागवैराग नयेदोयदारु सुंदररचनांठानी॥ दशविधिधरम
नदारमहाहै॥ सोईसिवानकहानी॥ धरो०॥ १॥ अजिहां जेइसधर्मेनिसेनिचढनकौ
चाहतमुनिजनध्यानी॥ ज्ञाननपनकरिनिरखिचढतजे॥ सोइवरेशिवराणी॥ धरो
०॥२॥ अजिहां इंद्रनरेंद्रखगेंद्रभुवनपति॥ वांछतनिशिदिनज्ञानी॥ अमुलिकसुत
हिराचंदकहतहै॥ निश्चयनिजउरआनी॥ धरोदिढ०॥३॥ इति॥ १६॥ समाधिमरण
पद॥ जपोनवकारमहासुषकारी॥ ज्यांसौंसुधरैमलाज्यासौंसुधरैसमाधितुम्हारी॥ ज
पो०॥ टेक॥ अजिहांदरसनज्ञानचारित्रमहातप॥ आराधनाइहच्यारि॥ अरहंतसि
द्धसुसाधुधरमफुनि॥ शरणगहोएचतारि॥ जपो०॥१॥ अजिहांद्वादश अनुपेक्षाउरध्या
वो॥ दशविधिधमेसंभारी॥ छपनपैतिसशोलषट्पण चौ॥ दोएकवरणउचारि॥ जपो०
२॥ अजिहांवाविसत्यागिअभक्षअसंजम॥ सप्तव्यसनपरिहारी॥ वारवरतमनमैंदिढरा
षो॥ अंससलेषनाधारि॥ जपो॥३॥ अजिहांसमेदशिखरअरगोमटस्वांमी॥ सेतुं
जोगिरनारी॥ मांगीतुंगीकैलासतारंगो॥ तिर्थसंभालोहेभारी॥ जपो०॥४॥ अजि
हांअंतमत्तेमासवसेकरके॥ आशासल्यनिवारी॥ अंतसमयवैरागसंभाल्यो॥ धर्मसु

ध्यानविचारी॥जपो०॥५॥अजिहांपदस्थपिंडस्थरुपस्थरुपातीत॥ध्यानएच्यार
तारी॥अमुलिकसुतहिराचंदकहतहै॥सोगतहोज्योहमारी॥जपो०॥६॥इति॥:
१७॥पदरागभैरवमैं॥विनसम्यक्तरेजिवनाही॥कालअनंतफिरेभवमां
विन०॥टेक॥जिनगुणकितिनशास्त्रपुराणहि॥श्रवणकरैजोनितिप्रतिच्याही
सत्यजिनागमतत्वार्थोदिक॥सत्रसिद्धांतवखानकराहि॥विन०॥१॥फुनिदश
लाणिकधरमपालै॥तेरहविधचारित्रधराही॥लाषकोटउपवासकरीकै॥सो
सकलदेहअधिकाही॥विन०॥२॥जोवनखंडीमुनिवरहोकर॥ध्यानमहानअ
लकराही॥वरखारितुमैंतरुतलवैठी॥तपस्याकरहिविशेषतहाही॥विन०॥३
सितकालदरियावनदीतट॥रहकैसीतवहोतसहाही॥ग्रिषमसमयगिरसीख
रुपर॥ज्याकरज्योगसधैघिरयाही॥विन०॥४॥सामायकतपजपदानपुजा॥वा
विसपरिषिहसहतसदाही॥इतनाकियाधरमफलभोगी॥फिरत्रसथावरमैंभट
ही॥विन०॥५॥थावरतिमविकलेंद्रिअसंज्ञी॥म्लेछनिगोदकुभोगभुमाही॥व्यंतर
ज्योतिषभुवनालयमैं॥द्वितियादिकषटनरकनज्याही॥विन०॥६॥एवाविसकव

निनहोहै॥सम्यग्दृष्टिजीवजेताही॥कहतहिराचंदतारतम्पतैं॥समकितआतमअनु
भोआही॥विन०॥७॥इति॥१८॥पदरागभैरव॥सतरानेमकरोनितप्राणी॥श्रावककोआ
चारसुजानी॥सतरा०॥टेक॥भोजनलीजेगीनतीमाफिकसचित्तवस्तुराखितेखानी॥घ
रमंदिररहनेंकीगिणती॥रणसंग्रामनकीहदठांनी॥सतरा०॥१॥दिशागमनकीअवधी
करणी॥ऊषधआदिविलेपनआनी॥तंबूललौंगयेलचिसुपारी॥पुष्पसुगंधसुंघनत
नमानी॥सतरा०॥२॥नाचख्यालदेखनमरजादा॥गीतनादसुननाफुनिकानी॥स्ना
नकरणराषेतोकरणो॥ब्रह्मचर्यसंख्याठहरांनी॥सतरा०॥३॥आभूषणपहरनकिप्रतिज्ञा
वस्त्रवाहनिनइणपुरानी॥चोकिपाटतकियादिविछोनां॥सेजपलंगप्रमाणप्रमाणी॥सत
रा०॥४॥वाहनआदिसतरयहसवनिशि॥सामायिकपिछेयादिल्यानी॥इहभवसुरगहिर
चंदलहसी॥अनुक्रमहोहैकेवलज्ञानी॥सतरा०॥५॥इति॥१॥पदरागचालहोरी॥दुर्लभन
नरअवतारदेखोदशदृष्टांतें॥दुर्लभन०॥टेक॥चोलकपाशाकधान्यद्युतमणिसुपनच
क्र॥कुर्मयुगपरमाणसाररे॥देषो०॥१॥श्रावककोकुलदुरलभभाई॥अंधेकोद्रव्यभंडाररे
देषो०॥२॥जैनधरमअतिमिलवोदोहिलो॥चिंतामणिदधिडाररे॥देखो०॥३॥नरकठिनअ

श्रुभदेशपावनं॥ ज्ञानविवेकविचाररे॥ देषो॥४॥ देहनिरोगसुसंगतशास्त्री॥ इंद्रीसु
श्रयाररे॥ देखो॥०५॥ सबमैंदुरलभसम्यकदर्शन॥ चौपथरतनवजाररे॥ देषो॥०॥६॥
हतहिराचंदसार्थककरल्यो॥ एहअवसरमनोहाररे॥ देखो॥०७॥ इति॥२०॥ पदराग॥
लहोरी॥ धिगधिगइहसंसाररेकछुसारनदीसे॥ धिगधिग॥० टेक॥ कदलिथंभविच
रननिकसै॥ ज्यौंइसजगतमैंडाररे॥ कछुसा॥०१॥ कनककामनिसेजगमोह्यो हो
अज्ञानगमाररे॥ कछु॥०२॥ ज्याकेकारणइतनांकरिए॥ सोतोनाआवेलाररे॥ कछु॥०३
जातैंचउगतिमांहिभ्रमणकौ॥ चक्रजेसाकुम्याररे॥ कछु॥०४॥ ज्यासौंदुखघडिया
ज्यौंझल्लरीपावतमाररे॥ कछु॥०५॥ अतिपरिचयतिसहोइनिरादर॥ इसअनादर
गाररे॥ कछु॥०६॥ सेवनकरतबहुतप्रियलागे॥ परभवकठिनअसाररे॥ कठिनअसा
कछु॥०७॥ ज्योरिनकरतचितहरखितकै॥ देवतफाररे॥ कछु॥०८॥ यामैंसारथातो
तो॥ तिर्थंकरादिनदाररे॥ कछु॥०९॥ कहतहिराचंदजिनइनत्याग्यो॥ सोउ
पाररे॥ कछु॥०१०॥ इति॥ २१॥ पदरागचालहोली कायकूंरोवतपुकाररे॥ कछुपा
छोनआवै॥ कायकु॥० टेक॥ शोककनैंपरभवशोतैंनदेकै॥ ज्यौंविजत्यौंफलडाररे॥ क
कं

छु०॥४॥ एक वेर सब कूं मरणं है॥ जेते संसार मझार रे॥ कछु०॥ मूये मरत मरसी थितिहै तैं सब का एक प्रकार रे॥ कछु०॥३॥ पर मरता रोवै तो खं मरता॥ रोवहि रोवै अपार रे॥ कछु०॥४॥ जो उपज्या सो निश्चै मरैगा॥ उदय अस्त रविला र रे॥ कछु०॥५॥ और कि मृत्यु गिनैं मूढ प्राणी॥ स्वमरण न लखैया र रे॥ कछु०॥६॥ ज्यौं नौ का रूढ नर चालै पै॥ न लखै स्वगमन लिगार रे॥ कछु०॥७॥ जस त्रृष सुख कछु ला न होय तो॥ रोवो संसार संसार रे॥ कछु०॥८॥ इन चउ मैं न एक कै तो क्यौं रोवत वारंवार रे॥ कछु०॥९॥ ता तैं शोक न कि जे हिराचंद॥ अनुपेक्षा चित धार रे॥ कछु०॥१०॥ इति॥२२॥ पद राग चाल होली॥ वाविस एह अखानरे तजिए अघ खानी॥ वावि०॥ टेक॥ वैंगन विदल वहु विज नरा॥ निशि भोजन संधान रे तजिए०॥१॥ पीपर वर उंवरि कठुंवरि॥ पाकरि फल जो अजान रे॥ तजि०॥२॥ कंद मूल फूल विषम धुमही॥ मांखन मदिरापान रे॥ तजि०॥३॥ फल अति तुछ तुषार चलित रस॥ एह यवीस प्रमान रे॥ तजि०॥४॥ कहत हिराचन्द इह नहिं चाखै॥ सो श्रावक परधान रे तजि०॥५॥ इति॥२३॥ पद राग गजल॥ भगवान आदिनाथ जिन सुमन मेरा लगा॥ आराम मुझे होत है दुःख दर्श सु भगा॥ भगवान०॥ टेक॥ मरुदेवि नंद धर्मकंद कुल में सुर जगा॥ नृप नाभिराज के कुमार नमत सुर खगा॥ भ

गवान॥१॥जुगलानिवारिधमेकै जंजालकौंतगा॥वसुकरमकूजरायशिवपंथमैंप

॥भगवान०॥२॥अवतोकरोसितावि महर वानिदिललगा॥कहैदासहिरालाल

मुक्तकामगा॥भगवान०॥३॥इति॥२४॥पदरागगजल॥दुगज्ञानखोलदेख

मैंकोइनासगा॥एकधमेविनासवअसारहंसमैंवगा॥दुगज्ञान०॥टेक॥सुतमा

ततातआइवंधघरतियाजगा॥संसारजलधिमैंसदाएकरतहैदगा॥दुगज्ञान०॥१

धनधानदासिदासनागचपलतरंगा॥इंद्रजालकेसमानसकलराजनृपखगा॥

ज्ञान०॥२॥तनरूपआयुजोवनवलभोगसंपदा॥जैसाडाभअनिविंदुउरनप

कगा॥दुग०॥३॥अमुलिकसुतकहतहिरालालदिललगा॥जिनराजजिनाग

सुगुरूचरणपैंपगा॥दुग०॥४॥इति॥२५॥पदसंगगजल॥षटकमेजेगृहस्तनित्य

त्यआचरो॥जातैंभवसमुद्रवीचफेरनापरो॥षटकमे०॥टेक॥तिनकालवीतरा

देवकीपुजाकरो॥फुनिसद्गुरुकीसेवाभावभक्तीआदरो॥षट्कमे०॥१॥

यनित्यपंचभेदसुकरोखरो॥नरसंजमविख्यातसातभातचितधरो॥षटकमे०

२ तपद्वादशप्रकारशक्तिसारआगरो॥सदाकालच्यारदानपात्रकूंअनुसरो॥षट०३॥

लचुल्लि चकि उखलवुहारि ल्लिपकु अघवुरो॥ षष्टम दुष्कृत पाजे न्प नार पुरष सिर पु
रो॥ षट०॥ ५॥ अमुलीक नंद कहत हिराचंद व्ये वरो॥ एह षष्ट दोष षष्ट पुण्पक मेतैं हरो
षटकर्म०॥ ५॥ इति॥ २६॥ पद राग गजल॥ गिरनार गया॥ आज मेरा नेम दे दगा खा
वन् विनां मैं व चाक रूं दिल रुपा म सैं लगा॥ गिर०॥ टेक॥ वल मनैं दर्दकि सन जादव स
व साथ ले सगा॥ व्याहन कूं सजि आये जिन के लार सुर खगा॥ गिर०॥ १॥ पशु का पुकार सु
न के ग्पान दील मैं जगा॥ चले छोड पशु वंध संज्पम ध्पान मैं पगा॥ गिरनार०॥ २॥ अमु
लिक सुत कहत हिरालाल दिल लगा॥ तवैं राजमती नैं हि घर वार कौं तगा॥ दिल दा
र०॥ ३॥ इति॥ २७॥ पद राग गजल॥ तकसीर विना छोड चले हम से क्यौं पिया॥ अवे
क्या करूं कित जाउं निकस जात है जिया॥ तकसीर०॥ टेक॥ करुणानिधान स्वामि प
शु छुडाय के दिया॥ मेरि क्यौं न दया आति कठिन क्यौं हिया॥ तकसी०॥ १॥ तुम तो हमा
रे नाथ अष्ट नव कि मैं तिया॥ सो इ नेह आज हम सु के सा छोड कै दिया॥ तक०॥ २॥ कहे
नेम ए संसार सव असार है तिया॥ ए सा सुणके हो राजुल नैं भूषण डार के दिया॥ तक०
३॥ अमुलिक सुत कहत हिरालाल सुन जिया॥ नेमनाथ साथ ज्पाके संज्पम सार त

पलिया॥नकसी०॥४॥ इति॥२७॥पद रागकाफी॥तुमतकरमेरामेरा॥कोइनहीज
मैंतेरा तुमत०॥टेक॥जननिजनकतियभगनिकनकधिय॥नहिंभरोसाइ
केरा॥तुमत०॥१॥किसकीरेसंपति॥किसकीसंतत॥२॥किसकाएहघरडेरा॥तुमत०
२॥राजकाजहयगपरथत्रिविका॥विनसतनलगेवेरा॥तुमत०॥३॥मीलरहेजि
तनखिरनिरज्यौं॥त्यौंविनसततनतेरा तुम०॥४॥वाह्यवस्तुकीकौनकथाहै॥पुत्र
तियादिघनेरा॥तुम०॥५॥पांचदिवसकोमेलोरे॥भाई॥अंतमत्रानवसेरा॥तुम०॥६
निन्नरहतअंवुजज्यौंजलमैं॥त्यौंसबतैंतुअनेरा॥तुम०॥अमुलिकसुतहिरा
न्दकहै॥भजअरिहंतभलेरा॥तुम०॥८॥इति॥पद रागदेवधुम॥मेरीअरजसु
महाराज॥होजिनराजाजी॥मेरी०॥टेक॥मैदुखिआदअनादिकालको॥सोदुख
मैंधारे॥नटक्पोनकेनिगोदनमांहि॥सोप्रभुदुःखनिवारो॥होजिन०॥१॥देनिगो
गतसातसातलषवेरअनंतहिज्यामैं॥एकसासमैंज्यामएमरएाहिभएअठारहवा
होजिन॥७॥२॥कायपृथविअपतेजवातचहु॥सातलपयाई॥दशलषवनसपती
यनकी॥ज्योंनलहीदुखहोई॥होजिन०॥३॥वेइंद्रीतेंद्री चौइंद्री॥दोदोलषदुखपा

यो॥ फेरतिरजंचज्यौनलषच्चारी॥ होजिन०॥ ५॥ सहेनरलरवच्यारज्यौनदुरव॥ छेद
नभेदनजाएगैं॥ देवन्नयोलरवच्यारज्यौनमैं॥ रंमारूपलुभानैं॥ होजिन०॥ ५॥ मनुष
जनमचौदहलषनटकत॥ तुमसेषावनपाया॥ अवनिजपददीजोहिराचंदकूं चौरना
सीदुरवगायो॥ होजिन०॥ ६॥ इति॥ २०॥ पदरागदेवध्रुम॥ देषोनिजमनमांहिवि
चार॥ आतमज्ञानीजीदेषो॥ टेक॥ काहांसुधारसअरविषकहा॥ होहीक्यौंसमहोइ॥
त्यौंजिनदेवकूं अवरदेवकी॥ उपमानलगेकीइ॥ आतम०॥ १॥ कहांकांचनवहुरीला
हकहां॥ केसिवरावरिकरनी॥ त्यौंजिनमतकौ उरमतनकी॥ क्योंकरउपमांधरनी
आतम०॥ २॥ कहांगजराजअरकहांरासभ॥ क्यौंकरसमतोलीजे॥ त्यौंजिनधर्मे
कुअन्यधर्मेकी॥ उपमाक्यौंकरदीजे॥ आतम०॥ ३॥ कहांश्रीखंडफुनिकहांकेरवक्यौं
करसमनमोहे॥ त्यौंनिरग्रंथसग्रंथगुरुनकी कवेनउपमासोहे॥ आतम०॥ ४॥ कहां
सुमेरअरकहांपरवत॥ क्यौंकरसमानहोही॥ त्योमुलसंघकुअवरसंघकी॥ नलगे
उपमाकोही॥ आतम०॥ ५॥ पंचरतनएसारजगतमैं॥ ढुंढडारकेदेनानां॥ अमुलि
कनंदहिराचंदकहे॥ सांचपरषकेलेना॥ आतम॥ ६॥ इति॥ २१॥ पदराग॥ क्यौंघर

मांहि भुल्यो अभागी॥ क्यौं घर०॥ टेक॥ धरमसुध्यानकरणकुमुद्योत॥ पापक
णकूफूल्यो अभागी०॥१॥ कालअनंततुइनकरलिसौ॥ नरकनिगोदरुल्यो०
भागी०॥२॥ मोहमदिरापानकरिकैं॥ कर्महिंडोलेझूल्यो॥ अभागी०॥३॥ कहतहि
चंदनरभवपायो॥ अवतुजभागखुल्यो अभागी०॥४॥ इति॥ ३३॥ पदराग॥ तेरा
कोईसुणतेरा न कोई॥ सुण भैया वे सुणतेरा०॥ टेक॥ मातपितासुतभाईकुटंवसव॥
स्वारथके सगै पावे॥ सुणतेरा०॥१॥ सुषमैं आकरनेहलगाते॥ कष्टपरे ये भगे पावे
सुणतेरा०॥२॥ इनमायामैं वंधरह्यो कौ॥ धर्मध्यान विसरै पावे॥ सुणतेरा०॥३॥
लिकसुतयौं जांनि हिराचन्द॥ धर्मकरो चित दै पावे॥ सुणतेरा०॥४॥ इति॥ ३४॥ पद
गरवमावच॥ भजोरे भया श्रीजिनभावधरी भजोरे०॥ टेक॥ पैरूगा न लागे रुपि
नलागै॥ नालागेदमरी॥ भ जो०॥१॥ नाघरजावै नादुरव आवै॥ खरचत नागठ
जोरे०॥२॥ जनमजनमकापापकटैगा॥ सुमरतएकघरी॥ भजोरे०॥३॥ कहतहि
राचन्द भजननन ज्याके॥ सोमुरवधूलपरी॥ भजोर०॥४॥ इति॥ ३२॥ सुखियानदिसे
कोई॥ १॥ पाजगमाही॥ २॥ सुखिया०॥ टेक॥ कैइककामिनिकारणिझुरत॥ कैइकके

तनांहि॥सुषिया०॥१॥किसहिकैतियकलहिकुरूपीसुदरतोहठग्राही॥सुखिया०॥
२॥केइकुग्राममलेछथलउपजै॥सुकृतहिनपछताहि॥सुषिया०॥३॥केइनि
धनअरुरोगपिडिततनु॥तातैंदुखिअधिकाहि॥सुखिया०॥४॥कैइकपुत्रकल
त्रवियोगे॥सोचितक्कैविललाहि॥सुषिया०॥५॥कहतहिराचंदसुखिसंतोषि॥अ
वरदुषीसवआही॥सुषिया०॥६॥ इति॥२५॥पदरागकेरवामें जियाकांइसोवो
रदिनरातडिया॥दिनरातडियादिनरातडिया॥हारेजियाकांइसोवो०॥टेक॥इह
वहमुवाऽजयमतुरवजतये॥क्योंनडरतनिजघातडिया॥जिया०॥१॥घडीघडी
यालवजषित॥जमआदेगोलातडिया॥जिया०॥२॥जयतपसंज्यमदानपुजाव्र
त॥नरकरोजिजिनजातडिया॥जिया०॥३॥जोनिजहितकछुचाहैहिराचंद॥तोसु
णसदगुरुवातडिया॥जिया०॥४॥ इति॥२६॥पदरागकेरवामे॥चालोचालो भविकज
नआज॥शिखरगिरपूजनवंदनकौ॥चालो०॥टेक॥वीसटोंकापरवीसजिनेश्वर
मुगतगयेमहाराज॥शिखर०॥१॥देशदेशाकोसंगजुआवै॥पूजतशिवसुषकाज॥शि
खर०॥२॥क्षेत्रभरतमैंएसमनांही॥सवतीरथशिरताज॥शिखर॥३॥नरकपशु

दोनुगतनासत॥ अनुक्रमशिवपुरराज॥ शिरवर०॥४॥ अमुलिकसुतहि न्दकहतहै। दरस्शनद्योजिनराजशिरवर॥५॥ इति॥ २७॥ पदरागकैरवामे मेरा नमसफलभयाआज देषागडमांगीतुंगीका॥ मेरा०॥ टेक॥ ज्यापरवतपरन्पानु कोडीमुगतगयेमुनिराज॥ देष्या०॥१॥ चंद्रनाथअरपार्श्वप्रभुका॥ मंदरवन्याशि वकाज॥ देष्या०॥२॥ आजसुफलदिनआजसुफलघडी॥ दुष्टकरमगयेभाज॥ देष्या०॥३॥ अमुलिकसुतहिराचंदकहतहै॥ आजसरेमेरेकाज॥ देरवा०॥४॥ इ २८॥ पदरागकैरवामें देषेदेषेमहामुनिराज॥ गएदुषमोसवभवभवके॥ देषे ०॥ टेक॥ ज्यौंरविदेषततमसवनासत॥ त्यौंतुमदेरवतआज॥ गए०॥१॥ भा नदैतुमदरस्शनपायो धन्यघडीदिनआज॥ गये०॥२॥ तुमप्रभुस्वांमीभवसारं तारणतरणजिहाज॥ गये०॥३॥ अमुलिकसुतहिराचंदकहतहै॥ अजरअमरभ राज॥ गये०॥४॥ इति॥ २९॥ वसिकरइंद्रियभोगभुजंग॥ इंद्रियभोगभुजंग॥ व सिकर०॥ टेक॥ कागदहथनीलखीस्पर्शननैं॥ बंधीपडतमतंग॥ वसिकर०॥ रस नाकेरसमछलिगलीको॥ खैंचतमरनउमंग॥ वसिकर०॥२॥ कमलपरीमलना

जारतकै॥घ्राणगमावतभृंग॥वसिकर०॥३॥नयनअदसमोहेङपलावै॥दीपक
देषिपतंग॥वसिकर०॥४॥करणेंद्रियवससघंटारवतैं॥पारधिहनतकुरंग॥वसि
कर०॥५॥इकइकविषयकरीएसातोक्याकहुपणकारंग॥वसिकर०॥६॥खाजिखु
ज्यावतहसैफिररुवैत्यौंइनकापरसंग॥वसिकर०॥७॥कहतहिराचंदइनजीतै
सोपावैसौख्यअभंग॥वसिकर०॥८॥इति॥४०॥पदरागठूमरी॥मैंज्पोगीहोकेजा
ऊरे॥मैज्पोगीहोकेजाऊरे॥एसीमेरीभावनामैज्पोगी०॥टेक॥कवमेंरागादिकपर
णतितजी॥सुमतासूंलोलाऊरे॥एसीमेरी०॥१॥मनवचतनतिनज्योगकरीथिर
आतमध्यानलगाऊरे॥एसीमेरी०॥२॥होयखिपकश्रेणीपरआरूढ॥मैंचारितमोह
नसाऊरे॥एसीमेरी०॥३॥च्यारकरमकौघातकरिकैं॥केवलज्ञानउपाऊरे॥एसी०॥४
शेषकरमकौंजलअंजलिदे॥शिवपुरवासवसाऊरे॥एसी०॥५॥कहत [redacted] हिराचंदइ
ससंपतिलै॥फेरनभवमैआऊरे॥एसी०॥६॥इति॥४१॥पदरागठूमरी॥महामंत्रमु
मुखसैवोलरे॥२॥एसीकोइभूलपरी॥माहामंत्र०॥टेक॥पांचूंपदकेपेंतिसअछर
ए॥नवकारसरवोलरे॥माहा०॥१॥जंतरमंतरआदीकोइनहीइससतोलरे॥माहामंत्र

०॥२॥ खानापीना मुखसेसो॥ वेसवकामनिठोलरे॥ माहा०॥३॥ अपच्यास सागरको अ
घत्रो॥ इकपद जयतअडोलरे॥ माहा मंत्र०॥४॥ कल्पतरु कामगवीए ही॥ चिंताम
मोलरे॥ माहा०॥५॥ कहत हिराचंद इन सबसाधना॥ नरका कपट देखोलरे॥ मा
मंत्र०॥६॥ इति॥ ४२॥ पद राग झंडोटी जील्ला॥ बुधजन जो सदा परनारी॥ बुधजन
टेक॥ परनारीसु राजा रावण नीज संपति सब हारी॥ बुध०॥१॥ धवल श्रेष्टि परतिय
नसाकरि नरक गयो सिलडारी॥ बुध०॥२॥ और बहुत जियइन संगततैं दुरगत
येधारी॥ बुध०॥३॥ परवधु सेवन दुष्टमहा है॥ नरक गमनकी बारी॥ बुध०॥४॥ कहत
हिराचन्द इन त्याग नतै॥ मुकति वरो तियप्यारी॥ बुध०॥५॥ इति॥ ४३॥ पद राग झंझो
टी जील्ला॥ शिलव्रत धरो सदा नरनारी॥ शिलव्रत०॥ टेक॥ शीलने सीता रामकीरा
अगनिकुंड भयो वारी॥ शिलव्रत०॥ सेठ सुदर्शन सील प्रभावै॥ सिंहासन भयो सु
दारी॥ शिल॥२॥ द्रोपदि अनंतमती चंदनादिक॥ विघन गयो भय कारी॥ शिल॥३॥
शिलतजी अमृता भयामती॥ कुलकुल गाइ गारी॥ शिल०॥४॥ साहसगति रावण
निलाषे॥ मरिगये नरक मझारी॥ शिल०॥ शिलतणी नव वाडि हिराचंद॥ सुरगमुक

कीवारी॥शिल०॥६॥इति॥४४॥पदरागझंझोटीजील्ला॥इसतनपरीकरोमतयारी॥इस
तन०॥टेक॥हाडमालनसाजालरुधिरपल।चरमनसुमढिसारी॥इसतन०॥१॥रोम
रेतमिलसातधातयह॥अशुचिअपावनासारी॥इसतन०॥२॥मातपिताकेविरजसु
उपजेपुक्रतिघिनावनहारी॥इसतन०॥३॥रोगक्लेशाकाधामएहीहै।मलमूतरकि
भंडारी॥इसतन०॥४॥लोहअगनिसंगतघनताडनताडन॥त्यौंइनसौंदुखभा
री॥इसतन०॥६॥कहतहिराचंदएसिजानिकैं।मुनिजनममतनिवारी।इसतन०॥७
इति॥४५॥पदरागझंझोटी॥जील्ला॥समकितविनाक्रियारदसारी॥सम०॥टेक॥दान
पूजाव्रतनेमकरोतो॥ज्योंहिविद्योवतवारी॥सम०॥१॥सोलभावनाइगविनआई
अंकविनासुन्यधारी।सम०॥२॥शास्त्रविनासुरगडविनगोपुर॥कंथविनाज्यौंनारी॥स
म०॥३॥नीवविनाघरमुलविनतरुवर।भुपविनाज्यौंरारी।सम०॥४॥कहतहिराचन्द
दर्शनशुद्धी॥तिर्थंकरपदकारी।सम०॥५॥इति।४६॥पदरागझंझोटीजील्ला॥जिनपद
पुजोसदासुषकारी॥जिन०।टेक।जलगंधाक्षतपुष्पचरुदीप।धूपफलअर्घउता
री॥जिन०॥१॥मयनासुंदरीश्रीपालपुजाकरि।कुष्टरोगगयोहारी।जिन०।२॥दादु

रपूजन भावधरैया॥ देव भयो अघटारी॥ जिन०॥३॥ ग्वालपालधनदत्त पुहपसौं॥ नृ
पकरकुंडयो भारी॥ जिन॥४॥ सो पुजनिकसव होसि हिराचंद॥ मदमछरसव छारी॥ जिन
५॥ इति॥ ४७॥ पदरागझंझोटीजील्ला॥ भविजनसवैचलो गिरनारी॥ भविजन०
क॥ सोरठदेशमैं गिरवरसोहै॥ सवजनको हितकारी॥ भविजन०॥१॥ कोडवहोतर
तसैमुनिवर॥ नेमजिवरीशिवनारी॥ भवि०॥२॥ मनुषजनमनिजसफलकरीजे॥ पुज
करअष्टप्रकारी॥ भवि०॥३॥ अमुलिकसुतहिराचंदकहे प्रभु द्योदरशनसुषकारी
विजन०॥४॥ इति॥ ४८॥ पदरागझंझोटीजील्ला॥ हलधरमुनिभये अतिभारी
हल०॥ टेक॥ राजकाजसवसुषसंपतिकैं॥ तृणसमदेकरडारी॥ हल०॥१॥ पंचम
व्रतपंचसमितसो॥ तिनगुपतिउरधारी॥ हल०॥२॥ द्वादशाविधिश्रुभतपकूंपाला॥ दुर्
परिग्रहटारी॥ हल॥३॥ दशालछनमनधरमधरतहै॥ वारभावनाप्यारी॥ हल०॥४॥ र
यभंडारसोहै॥ सहतपरीषहयारी॥ हल०॥५॥ अठाविसमुलगुणउतरगुण॥ लरवचउ
रासिसवारी॥ हल०॥६॥ अमुलिकसुतहिराचंदकहतहै॥ चरणकमलवलिहारी॥ ह
ल०॥७॥ इति॥ ४९॥ पदरागदादरा॥ मनवा जिनकेचरणचितधरणा॥ मनवा०॥ टे

क॥ डुठीरेमायामोहमृगजलमैं॥ नाहककायकुमरणा॥मन०॥१॥ श्रीजिननामकाञ्ज
हाजवनाकर॥ भवदधिपारउतरणा॥मनवा०॥२॥ इनविनधुंडततीनजगतमैं
नरनहिकहिकहिशरणा॥मनवा०॥३॥ कहतहिराचंदइनपरसादे॥ जनममरण
दोउहरणा॥मनवा०॥४॥ इति॥पू०॥ पदरागदादरा॥ जियराकरुणाधरमनीतकर
णा॥धरमनीतकरणा॥धरमनीतकरणा॥जियरा०टेक॥ सवकूं वल्लभजिवसरिषाहे॥
घातवाधनहिवरणा॥जिय०॥१॥ धर्मदयाषटमतमेंपुकारै॥ पालैसोभलाउच्चरणा
जियरा०॥२॥ निजसमसवजिवज्यौंवहुवरणगो॥ दुधमेमफेरकछुपरणा॥जियरा
०॥३॥ निजकंटकलगेदुखकितनाकै॥ परपेक्योंअसिधरणा॥जियरा०॥ दषउत्प
नकीमातदयाहै॥ तातैघातसुडरणा॥जियरा०॥५॥ हिंसाकरिकैधरमसधैतो
कायकुदषआचरणा॥जियरा०॥६॥ धिवरपारधिस्वर्गसिधायेगे॥ नर्ककुविनकां
विचरणा॥जियरा०॥७॥ जोअहिमुखमैंअमृतनिकसै॥ तोहिंसामैंदषभरणा॥जि
यरा०॥८॥ अपनांकुटंवसवयज्ञमैंडुकणा॥ परजिवकाहेकुहरणा॥जियरा०॥९॥
परपिडपापरउपगारपुण्यसो॥ सवश्रुतसारएवरणा॥जियरा०॥१०॥ कहतहिरा

लालजीव दयाकरै। तो भवसागर तरणा॥ जियरा०॥११॥ इति॥५१॥ पद राग
ठताल ज्ञातका॥ गावत जिनगुणगंभीर सुरनर खगकारी॥ गावत०॥ टेक॥ प्रग
ट्यो केवलसुज्ञान समवसरण धनद आन॥ रचत भयो तिन हिथान॥ हरखहि
ये धारि॥ गावत०॥१॥ सिंघासन मणि विचित्र प्रातिहार्य सहित चित्र॥ अंतरिक्ष जि
न पवित्र॥ बैठे अघहारी॥ गावत०॥२॥ वाणि झरत जिन उदार सकल अरथ सहि
त सार॥ सुनत हरत भवविकार॥ सब जन हितकारी॥ गावत०॥३॥ बजत है मृदंग
चंग बासरि अर बिन उतंग॥ लोक होत सुनत दंग॥ नाचत नरनारी॥ गावत०॥४॥
नावत कर जोरि भाल अमुलिक सुत हिरालाल॥ द्यो निज संपत क्रिपाल॥ अरज
हमारी॥ गावत०॥५॥ इति॥५२॥ पद राग दादरा॥ संसार सार झूठा रे देखो प्यारे॥ सं
०॥ टेक॥ खसखस फूल्य तुल्य उपर लालि लाल है॥ नीचे मणै मूल काल कुटा रे॥
देषो प्यारे संसार०॥१॥ उसको बूंद रपण को रे सुपनो॥ डालु से पान जैसा टुटा रे॥ दे
०॥२॥ किनकि रे लडकी किन का रे लडका॥ पाणी का कुंभ जैसा फुटा रे॥ देषो०॥३
किनकि लुगाइ माइ॥ किन का रे भाई॥ किन का कुटंब आयु खुटा रे॥ देषो०॥४॥ क

नहिराचन्दइनमतीसेवो॥धरमभंडारज्ञासीलुटारे॥देषोप्यारेसंसार०॥४॥ इति
५३॥ पदरागदादरा॥ तोरेविनमेरानकोइजिनराजरे॥तोरे०॥टेक॥मातनुहितात
तुहिवडभ्राता॥तासुवहुप्रेममहाराजरे॥तोरे०॥तुहिपरमेशजगदीशईशतुहीस
वदेवनकेशिरतजरे॥तोरे०॥१॥जौतुमोरवसुरवअवदेतनाहिमोक्कं॥कहांपजाचु
किसेआजरे॥तोरे०॥२॥अमुलिकसुतहिराचन्दनिततोकूंअरजकरतनिजकाज
रे॥तोरे०॥३॥इति०॥५४॥पदहोरीरागकाफी॥चालोजिनधामेधूममचीहोजिन
विभावसुषेलियेहोरी॥चालो०॥टेक॥सम्पकदर्शनकानिरज्पामें॥अनुकंपाकिक
टोरी॥सीयलसंयमअविरअरगज्पा॥ज्ञानगुलालोकिझोरी॥आजिनविभावसौं
खेलिएहोरी॥चालो०॥१॥निश्चयरंगचिदानंदकेरा॥अनुभवकेशारधोरी॥च्यारि
तकीपिचकारीभरीहै॥सुमतासषीपरछोरी॥आज०॥२॥रागविरागफागजिनगुण
कातपजपमुरजेतंवोरी॥याविधहोरीहिराचंदखेलो॥जनममरणनालहोरी॥आज
०॥३॥इति॥५५॥पदहोरीरागकाफी॥वीतरागनकेदरवारहोरीहोयरहीहै॥वीतरा
ग०॥टेक॥दरशनवसनज्ञानउपभूषणच्यारितरंगअपार॥होरी०॥१॥कुमति

कुमार्गकीधूलउडाई॥सुमतासखीलिनीलार॥होरी०॥२॥जिनजत्रापुहपअने
कभांतिकेमनअलिकरतगुंजार॥होरी०॥३॥दयामिठाईरसभरमेवासत्यतंबो
लउदार॥होरी०॥४॥अष्टकरमईंधनकीहोरिरची॥ध्यानअगनिकरिछार
री०॥५॥याविधहोरीहिराचंदखेलो॥बहुरिनआवोसंसार॥होरी०॥६॥इति॥पू६॥प
दहोलीरागकाफी॥रंगमच्योजिनद्वाररे चालोखेलिएहोरी॥रंगमच्यो०॥टेक॥क
एगावसंतसरवादशलछन॥सुमताछबीलीनाररे॥चालो०॥१॥संज्यमकीपिकारी
बनाई॥समकितरंगउदाररे॥चालोखेलियेहोरी॥२॥ज्ञानगुलालविशाललियेक
र॥अष्टुभकरमपैंडाररे॥चालो०॥३॥षोडशभावनकीउरमाला॥धरमअवीरअ
पाररे॥चालो०॥४॥वजतमृदंगअष्टुभउपदेशका॥सुधबुधतालसताररे॥चालो०॥५
कहतहिराचंदखेलोफागयौं॥सुरगमुकतकोवाररे॥चालो०॥६॥इति॥पू७॥पदहोरी
रागकाफी॥जाउगिगडनारसखीरी॥अपनेंपियासौंखेलूंगीहोरी॥जाउंगी०॥टेक॥
समकितकेशारअवीरअरगज्या॥ज्ञानगुलालउदार॥सखीरीनेमपियासैं॥१॥
ततत्वकीभरिपिचकारी॥सीलसलिलजलधारा॥सखीरी०॥२॥दशविधिधर्मको

दलगुंजत।गुणगलततालअपारसखीरी०॥३॥अष्टुभनकरमकीहोरीवनाईध्या
नदियोअंगारासखी०॥४॥इनविधहोरीषेलतराजुल॥पायोसुरगदुवारा॥सखी०
कहतहिराचंदहोरीखेलो।महिमाअगमअपारासखी०॥६॥पदरागखुमावच॥मो
अरजीचितधारोरेप्रभुपारउतारो॥मोअरजी०॥टेक॥योभवसागरउदयभस्योहै
कोउतरूजलभारोरे॥प्रभु०॥१॥इनअवसरमेउरनदाता।एहउपगारतुम्हारो
रे॥प्रभु०॥२॥लाखवातकीवातकहतहै॥हिरालालकुतारोरे॥प्रभु०॥इति॥पूर्ण॥
पदरागखुमावच॥नेमजिसुरीपुरीवारोरेसरदारहमारो॥नेमजि०॥टेक॥सिवादेवि
देविनंदनसवदुषभंजन।समुद्रविजयकोदुलारोरे॥सरदार०॥यदुकुलमंडन
करमकुखंडन।राजुलकोभरतारोरे॥सरदार०॥२॥अमुलिकसुतनितअरजकरत
है॥आवागवननिवारोरे॥सरदार०॥३॥इति॥६०॥पदरागकालिंगडो॥सावरियामे
रेरूठायचालेगिरनारी॥सावरिया०॥टेक॥समुद्रविजयसुतनेमनवलजी॥सवजी
नकोहितकारी॥सावरि०॥१॥अष्टजनमकेप्रीतममेरे॥आजचलेपरवारी॥सावरि०
२॥तपकरकेप्रभूतेममुगतमैं॥भविजनकूंगयेतारी॥सावरि०॥३॥अमुलिकसुतहि

राचंदकहतहै॥ चरणकमलवलिहारी॥ सावरि०॥६॥ इति॥६१॥ पदरागकालिंगडो॥
केशरिया आदिजिनंद थारी छबिन्यारी॥ केशरिया०॥ टेक॥ नाभिरायमरुदेविके
दन॥ मोहलईशिवनारी॥ केश०॥१॥ सोहनिसूरतमोहनिमूरत॥ सुरजनलजाव
नहारी॥ केश०॥२॥ अमुलिकसुतहिराचंदकहतहै॥ भवभवमेंसुषकारी॥ के
३॥ इति॥६२॥ पदरागष्याल॥५॥ चंद्रप्रभुअतिद्युतितोरी॥ मोरीनजरियाहारी॥
छिनमेंसारी अतिभारीनिरखिनिरखिलषलखीजिनेश्वरथारी॥ चन्द्र०॥ टे
क॥ तुमतोप्रभातीतजी॥ पदयुगइंद्रध्यावतनावतशिरवारवार॥ शेषरमा ति
कलाजतहै॥ दीपकरविआगेंहोतजयारी॥ चन्द्र०॥१॥ आठमेंहिराचन्दही रवि
ति[?]लकगावतनावतअवतारतारा कर्मेंहि घेरतहेरतहो॥ वंदतकरजोरीहोव
लिहारी॥ चन्द्र०॥२॥ इति॥६३॥ पदराग॥ हमसेउधारनाराज॥ थानेकरुणाके
घिजाने॥ हमसे०॥ टेक॥ विधिनाकेवसिनिशिदिनभटकायो॥ चवरासीलष
रपिरपायो॥ शरणागतजिनआयो॥ तारणायेतारणराज॥ थानेक०॥१॥ दुखि
केऊटपटदुखतुमभाने॥ अपनांसमकरशिवपुरठाने॥ तारणतरणकहाने॥

हारण मोहारणराज॥थानेक०॥२॥रत्रानाजोदत्रात्रातकरीकविगावैतुम
रेगुणकोअंतनआवै॥हीराचंदक्यापावै॥तारणहोतारणराज॥थाने०॥हमसे०
३॥इति॥६४॥मेघमल्लार॥चौजरवदरियावरषे॥चौजर०॥टेक॥ज्यौंज्यौंपतिपतीह
रषेवहुहरषे॥चौजर०॥१॥ठाडेगिरिसेतरुतनिहचल॥पौनझकोरहिपरसेतन
परत्रो॥चौजर०॥२॥कालीरयणीभयंकरदुरघरवेतोनडरेडरषे॥कछुडरषे॥
चौवोर०॥३॥एसेमुनिकूंअमुलिकसुतनितपाउपरतनहरषे॥चौवोर०॥४॥६५
पदरागठूमरी॥सावरियामोहेछांडिराजभलाकियातुनेरे॥सावरि०॥टेक॥मोहे
विछांडीदीनीअरदीछ्यालीनी॥जादवकुलअजुवाल्याराजभलाकि०॥१॥सं
ज्यमअवमैंजिनकाधरूंगी॥आतमहितकाकरूंगीकाज॥भला०॥२॥अमुलि
कसुतहिराचन्दकहतहै॥नेमप्रभुजिमेरिरारवोलाज॥भला०॥सावरिया०॥३॥
इति॥६६॥पदराग॥तारणतरणजिहाजस्वांमिमहाराज॥तारण॥टेक॥अन्यदेव
मैंवहुतहिसेये॥सरियोएकनकाज॥स्वांमीमहा०॥१॥अवमैंप्रभुतुमभेदपिछाना
इनभवअवरनराज॥स्वामी०॥२॥सिसनिवायमैतोकुपुकारतासुनियेप्रगट

अवाज॥ स्वामि०॥३॥ मुगुटमणीथे हिराचंदके॥ शरणगहे कि राखो लाज॥ स्वा
मि०॥४॥ इति॥ ६७॥ काफी॥ पूजूं पुजूं रे जिनेंद नित कारिया॥ नित कारिया भवता
रिया॥ पुजुं पुजूं०॥ टेक॥ निरखीर दधि को निर्मल भरके झारिया॥ मोहे पार उतारो भ
वसमुद्र वारिया॥ पुजूं०॥१॥ मलयागिरि चंदन सीतल वास विस्तारिया॥ संसार ताप
संताप हरो नहि पारिया॥ पुजूं०॥२॥ मोति सम अक्षत पुंज अखंड सुधारिया॥ अक्ष
यपद संपत पापत करो अवारिया॥ पुजूं०॥३॥ फुल रास वास अलि ज्यापे करे गुंजा
रिया॥ दुखदाम काम मोबाण निवारो असारिया॥ पूजूं०॥४॥ पकवान अनेक प्रका
र नरिके थारिया॥ इह भुख दुख मम रोग हरो अति भारिया॥ पुजूं०॥५॥ दिप रत्न
वर्णवत रन मद सुसंवारिया॥ मम मोह के मे अज्ञान हरो अंधारिया॥ पुजूं०॥६॥ अति
सुद्ध सुगंध दशांग वह्निपर जारिया॥ सब कर्म काष्ट मेरे जार करो प्रभु छ्यारिया
जूं०॥७॥ फल आंब जांबु नारिंग पूंगि मनोहारिया॥ हम मोक्ष सौख्य फल देहु
पाप निवारिया॥ पुजूं०॥८॥ जल गंध आदि वसु॥ अष्टक अर्घ उतारिया॥ निज
पद अनर्घ द्यो हिराचंद उधारिया॥ पुजूं०॥९॥ इति॥ ६८॥ पद राग ठूमरी॥:

वगियामे राजन वगियामे साजन महावीर आये मेरे मन भाये जी॥ वगियामे०॥ टे
क॥ कालविना षटरितु फुली है॥ फलवा फुलन करित रुनम गाय जि॥ वगियामे०
१॥ सिंघ गजादिक गाय वघेरा॥ हंस विली अहि नोल कहाये जि॥ वगियामे०॥२॥ बै
र छांडि एकठे सव वैठे॥ अचरज देखि मैं तुमकु वधाये जि॥ वगियामे०॥३॥ धन्य घ
डि दिन आगतु म्हारो॥ पुन्य उदै सो प्रभु तुम पाये जि॥ वगियामे०॥४॥ कहत हिर
चन्द मालि वचन सुनि। आनंद श्रेणिक उर ना समाय जि॥ वगियामे०॥५॥ इति
॥६९॥ पद राग ठुमरी॥ वसुपूज्य नंदन वा तिरथपती॥ वसुपूज्य०॥ टेक॥ चंपापुरी
मे यो जयावती जायो। वासुपूज्य जिन मोह निकंदन वा तीरथपती वसुपूज्य०
१॥ स्वरण वरण तनु उंची सतर धनु। वर्ष लक्ष आयु महिष को लछन वा॥ तीर
थ०। वसु०॥२॥ दिक्षा जिन धरी तप जप करी॥ वसु विधि करम को कियो खंडन वा।
तीरथ०। वसु०॥३॥ चंपापुरी परी मुगति वधु वरी॥ अमुलिक सुत कहै आयो वंदन
वा तीरथपती वसुपूज्य०॥ इति॥ ७०॥ पद राग जंगलो॥ गोमटस्वामिजी गोम
टस्वामिजी॥ वंदू सिर नामी जी॥ गोमटी०॥ टेक॥ अद्भुत महिमा थारी सुनी है। धा

वतसुरनरमुनिशिवगामिजी।वंदू०॥१॥तुमविनास्वामीवहुदुखदेखे।सोतुमज
नतअंतरज्यामिजी॥वंदू०॥२॥मैयाधिनहोविरदतुम्हारो॥तुमहोसाहिबअव
दुखवामिजीवंदू०॥३॥अमुलिकनंदननिपटअयानी।ल्योहिराचंदकूं।त्रि
रठामिजी।वंदू०॥४॥इति।७१॥पदराग॥जिनतोमैंअवशरणगतआयो।भव
दधिपारउतारिये॥जिनतोमैं०॥टेक॥कालसुभटमेरेलारलग्योहै॥याकोभ
रटारिये॥जिनतोमैं०॥१॥हयगयरथअरुराजसंपदा।दमकचमकज्यूंवरवा
ये।तुमप्रभुदीनदयालकृपानिधिमेरियाउरधारिये।जिन०॥२॥अष्टकर
मोहेवहुतसंतापेइनकोमूलउखारिये।जिनतो०॥३॥अमुलिकनंदहिराच
कहै॥आवागवननिवारिये०॥जिन०॥४॥इति।७३॥पदराग॥सुणएकधरमवि
नारेसुग्यानी॥अथिरजगतसवजानिए।सुणएक०॥टेक।तनधनजोवनइं
द्रिविषयसुख।सुपनावतकरिमानिए।सुणए०॥१॥अनुजतनुजतियमाता
ताथित।विजलीसमएपिछानिये॥सुणए०॥३॥नरपतिसुरपतिखगपतिह
हरा॥इंद्रधनुषज्यूंप्रमाणिये।सुणएक०॥४॥नाकछुथिरताइनआदिकसव।छा

यासमकरिठानिये।सुण०॥५॥अमुलिकनंदहिराचंदकहे।रत्नत्रयउरआनिये
सुणएक०॥६॥इति।७४॥पदरागविहाग॥एतोफलपापधरमकेभाई।पापधर्मे
केभाईफलपाप०॥टेक॥एकनकेघरमंगलगावै।एकनकेघररोवै।एकनकौ
थलरहनपावै।एकमहलमैंसोवैफल०॥१॥कोइएककेघरमालखजाना॥
कोइएककेनहिदाना॥कोइएकपरघरकामकराना॥कोइएकनृपकदाना॥
फल०॥२॥एकसदासुषभुंजतनारी॥एकनकौनहिनारी॥एकफिरेजगमांहि
भिकारी।एकनकौधननारी॥फलपाप०॥३॥एकनकारुपसुभगानिरोगी।एकन
कातनरोगी।एकसदानरसवसुवियोगी।एकसदासुसंयोगी।फल०॥४॥पापपु
न्यफलएहकहावे।कविपरतछवतावै॥अमुलिकसुतहिराचंदहिगावै।अनुभ
वमनमेंलावे।फल०॥५॥इति।७५॥पदराग॥हाजिमोहेमहापुण्यउपजानापुण्ये
उपजानापुण्येउपजाना।हाजीमोहे०॥टेक।अष्टापदगिरनारशिखरजीचं
पापावापुरह्नना।हाजीमोहे०॥१॥मांगितुंगीतारंगसेतुजे।जात्राकरएकूंसघा
ना।हाजीमोहे०॥२॥श्रीजिनमंदिररचिकैतामैं।जैनविंवपधराना।हाजीमोहे

३॥पुजाप्रतिष्टाकरुसंघलाई॥मुनिकूंदानघठाना॥ हाजीमोहे०॥४॥धर्मेक
नुदानअभयद्यौपंचपरमपदध्याना॥हाजीमोहे०॥५॥परत्रपगारमार्गेप
वना॥रथजादिचलाना॥हाजीमोहे०॥६॥योभावभयोसोप्रभुपुरवो॥
लिकनंदनगाना॥हाजीमोहे०॥७॥इति॥७६॥ पदरागसोरठ॥मनमरकट
अचलकभाई॥मनमर०॥टेक॥छिनमेप्रविनता॥छिनमेमलिनता॥उल
पुलटनटनाई॥मन०॥१॥अरहटघटज्यौंध्वजपटभौरा॥चक्रसमानभ्रमाई॥
मन०॥२॥मनसाचंचलतरनदूजा॥सहसकोशचलजाई॥मन०॥३॥कपटझपटि
है॥तनसुलपटिरहै॥जायकहासुकहाई॥मन०॥४॥विषयभोगमेंलीनरहे
तपजपमांहिबुराई॥मन०॥५॥तंदुलमिनसोमनसाअतै॥पावत नरकके
ई॥मन०॥६॥इति॥७७॥पदरागसोरठा॥ मरूजीमैंनिरधारमरूजीमेनिरधार
मंदिरपेक्यौंनचालो॥मारूजी०॥टेक॥कबकिमैंठाडीभईअरजकरुछु॥आप
हादयाकेभंडारमंदिरिपे०॥नेमजि०॥१॥तुमविनास्वामीकोनहमारा
वतुमभरतारमंदरिपे०॥मारूजी०॥२॥धनराजुलमतीसतिहिराचन्दकहै॥

दिछ्याल्हिनी नेमप्रभु लारा मंदिरिये ०॥३॥ इति ॥ ७७ ॥ त्रेपनक्रियापदलावणी॥
श्रावणक्रियात्रेपणकहिएरे॥ श्रावककोआचारकह्योएह निति प्रतिआचरिये
श्रावणक्रिया०॥ टेक॥ प्रथममुलगुणवसुविधिमानिरे॥ पिपरवरउंवरिकठुंव
रिफलजानि॥ मद्यमकारतिह्नीरे॥ इनवसुकोअतिचारसहितत्यागकिजेअघ॥१
खानी॥ चाल॥ त्रसजिवकोघातनकिजे॥ परपिडाकुवचनवदिजे॥ परधनपरति
यनगहीजे॥ परीग्रहदशधासिमकरियेरे॥ श्रावक०॥१॥ नित्यदशादिशअवधी
करणारे॥ देशप्रमाणनग्रवनसरितादिकयमव्रतधरणा॥ अनर्थदंडनाआचर
णारे॥ सामाइककयेकांततिहकालयथाआदरण॥ चाल॥ पोषधविधिचोपर्वधरो
भोगोपभोगनेमवरो॥ दानसुपात्रकुच्यारिकरो॥ एवंद्वादशाव्रतआदरियेरे॥ श्रा
वक०॥२॥ तपाअनशनअवमोदरियेरे॥ खानेकीवस्तुसंख्यारसपरित्यागहिकरि
ये॥ विविक्तशय्यासनरित्यागहिकरिये॥ विविक्तशय्यासनरहियेरे॥ कायक्लेश
मिलीतपछहएहविधअभ्यंतरकहिए॥ चाल॥ प्रायश्चितअरूविनये॥ वैय्यावृत्य
सुस्वाध्याये॥ कायोत्सर्गरुध्यानलिये॥ बाह्यतपएहविधिधरियेरे॥ श्रावक०॥३॥ जंबु

पणत्रिमकारनभंजोरे॥ द्युतपलसुरावेश्या ऽहेही चोरिपरस्त्रीतजो॥ सामाइकपर्वे
उपासनजोरे॥ सचित्तत्यागिदिनकुब्रह्मव्रतधरिनिशिभोजनवरजो॥ चाल॥
स्वस्त्रिपरस्त्रिसदा॥ सर्वारंभनकरोनकदा राखीवस्तरएकजदा॥ ग्रंथयाविनसव
रिहरियेरे॥ श्रावक ०॥६॥ अनुमतकिनकूंनादेनारे॥ श्रावक ०॥६॥ अनुमतकि
कूंनादेनारे॥ भुक्तिसमयजेबुलायवाघरज्या भोजनलेना॥ कमंडलकरेपिपि
छिधरनारे॥ एकवसनभुक्तिपात्रअसननिमितपणघरररवना॥ चाल॥ एह्नु
ऐलकऐलकअवदुसरो॥ पींछिकमंडलकोपिधरो करपात्रउडंडाहारकरो॥ ए
कादशप्रतिमाउच्चरियेरे॥ श्रावकको ०॥५॥ धरोएकसाम्यभावचोखोरे॥ जलगाल
अन्नअनयउषधशास्त्रदानपोखो॥ दर्शनज्ञानचरणचितराखोरे॥ अनस्तमितं
शिभुक्तितजो॥ एत्रिपणक्रियालेखो॥ चाल॥ मुलगुणवसुप्रतिमाग्यारा॥ चौदानव्रत
हितपवारा॥ त्रिरतनफिरइकइकसारा॥ हिराचन्दकहेजातैंतरिपेरे॥ श्रावकको
०॥६॥ इति॥ ७९॥ अथअन्नोहणीदलसंख्याकथन॥ पदलावणी॥ कटकसवज्ञोणि
कासुनियेरे॥ आगममैंनवभेदकहेसोपृथकपृथकभणिय॥ कटक॥ टेक॥ एकर

एक लिजे हस्तिरे ॥१॥ पंच सुभट ॥५॥ तिन तुरंग ॥३॥ एह तो प्रथम कहीयती ॥ तीन र
थ ॥३॥ वहु रिती नंदती रे ॥३॥ सुभट ॥१५॥ नव तुरंग ॥९॥ एह सेना दुजि गिनती चा
ल ॥ नोम तंग ॥९॥ नौ रथ ॥९॥ जाणो पैंतालिस पादे ॥४५॥ मानो ॥ सताइस वाजि ॥२७
वषाणो ॥ वहिए एह सेना मुख ततियेरे ॥ आगम मे ॥ ॥१॥ सताइस सताइस रथ ॥२७
करी ॥२७॥ रे ॥ भट एक सो पैंतिस ॥१३५॥ हय इक्यासि ॥८१॥ गुल्म कही वहुरी ॥ इक्या
सि इक्यासि रथ ॥८१॥ गज ॥८१॥ फिरी रे ॥ हय दोयसै तियालिस ॥२४३॥ पचम वाहिनि क
हि सारी ॥ चाल ॥ दै शात तियालिस ॥२४३॥ गय वरा ॥ रथ त्यौ ॥२४३॥ भट वार सि पंदर ॥
१२१५॥ हय सात सि उगणतिस ॥७२९॥ पृवरा एतो षष्टम पृतना कहियेरे ॥ आगम मे
॥ ॥ सात सै गुणतिस हस्ती ॥७२९॥ लियेरे ॥ छतिसै पैंतालिस भट ॥३६४५॥ इकवि
स सिसत्यासि हये ॥२१८७॥ सात सिगुणतिस रथ ॥७२९॥ चमु कहिए रे ॥ एक विस सै स
त्यासि करी ॥२१८७॥ अरइ तनें रथ ॥२१८७॥ लहिए ॥ चाल ॥ भट दस सहस नो सि पैंस
ठिकी ॥१०९३५॥ हय पैंसठि सै इकसठ की ॥६५६१॥ एह वसुमी अनिकिनि कहिकी
त्रिसुल अनिकिनि वसु भेद भयेरे ॥ आगम ॥३॥ इहां लौं वढै त्रिगुण त्रिगुण सो दश

अनिक्किनिकि॥ एकक्षोणिकै सुणो कहुं सब सै। एकइ महस अर आठसै॥ सतरि परिरथइतनै॥ १८७०॥ तितनैगज॥ २१८७०॥ विलसैचाल॥ नट लख नव हजार त्र सै॥ १०९३५०॥ हयपैं सठि सहस छह सिद रो॥ ६५६१०॥ इक अक्षोणि मइ एसै॥ हिरदमंदकहे विनयेरे॥ आगम०॥ ६॥ इतिसंपूर्णे॥ ८०॥

लिखी मन्दीरजी बडा तेरापन्थी थान लीपे मैं सवाई जयपूर

श्रावण शुक्ला १५ मंगलवरस १९८६ बीक्रम

हस्ताक्षर राजूलाल भावसा